

हंसना जन्मजात है, रोना सीखते हैं

रोज़मर्रा में हम कई बार हंसते, कराहते और आह-उई के भाव व्यक्त करते हैं। क्या ये अभिव्यक्तियां कुदरती होती हैं या हम किसी से इन्हें सीखते हैं। हाल के शोध से पता चला है कि केवल हंसना और राहत के भाव ही कुदरती हैं, शेष हाव-भाव हम सीखते हैं।

कौन-सी ध्वनियां स्वाभाविक होती हैं, यह जानने के लिए नीदरलैण्ड स्थित मनो-भाषा संस्थान में कार्यरत डिसा सौटर ने अपनी टीम के साथ एक अध्ययन किया। इस टीम ने आठ बधिर और आठ सामान्य प्रतिभागियों को नौ अलग-अलग भावनाएं व्यक्त करने को कहा, मगर बगैर शब्दों के। इन भावनाओं में डर, राहत, क्रोध, आनंद, जीत, घृणा और उदासी शामिल थीं।

इसके बाद सौटर और उनकी टीम ने इस रिकार्डिंग को 25 सामान्य प्रतिभागियों को दिखाया और प्रत्येक से उस रिकार्डिंग में व्यक्त भावनाओं के बारे में बताने को कहा। पता चला कि बधिर व्यक्तियों द्वारा व्यक्त केवल हंसी और राहत की निश्वास ही आसानी से पहचाने गए थे। सौटर ने बताया कि शायद यही भाव सबसे ज़्यादा सशक्त थे।

पच्चीस सामान्य व्यक्तियों की उपरोक्त पैनल को

व्यक्त भावनाओं को पहचानने में तब ज़्यादा आसानी हुई जब ये भावनाएं सामान्य (यानी अ-बधिर) व्यक्तियों ने व्यक्त की थीं। यहां तक कि बधिर व्यक्तियों की भयजनित चीख भी आसानी से पहचानी नहीं गई।

इसका मतलब यह है कि कई प्रकार की भावनाओं को व्यक्त करने वाली ध्वनियों का विकास काफी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि हम दूसरों को वे ध्वनियां निकालते हुए सुनें।

सौटर का मत है कि हंसना और मुस्कराना दोनों ही संवाद में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनसे टकराव को कम करने में मदद मिलती है। मनुष्यों के अलावा दूसरे प्राइमेट्स भी हंसते हैं। जैसे यदि गोरिल्ला को गुदगुदी की जाए तो वह हंसता है।

लंदन इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंस में कार्यरत सोफी स्कॉट कहती हैं कि इस प्रयोग से यह समझने में मदद मिलती है कि जब श्रवण फीडबैक अनुपस्थित हो तो मौखिक विकास कैसे होता है। हंसी के बारे में जो कुछ पता चला है वह रोचक है क्योंकि हंसना बोलने का नहीं बल्कि अलग ढंग से सांस लेने का एक तरीका है। (स्रोत फीचर्स)